

Sanskrita Eka Mahan Sampatti

——
संस्कृत ऐक महान सम्पत्ति

——
Document Information



Text title : Sanskrita Eka Mahan Sampatti

File name : sanskRRitaekamahAnsampatti.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org



संस्कृत ऐक महान सम्पत्ति



संस्कृत भाषा को मत भूलो भारत की सन्तान,
अऽऽे भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान् । ०
वैज्ञानिक, यह हेमो, कैसी ठसकी अक्षरमाला,
स्वर-व्यञ्जन का हेमो कैसा वर्गीकरण निराला,
वर्ण और उच्चारण का भी कैसा सूक्ष्म विवेक,
जैसा लिपि पढऽो वैसा ही दोनों बिलकुल ऐक,
दुनिया की किस भाषा में है ऐसा लिपिविज्ञान,
अऽऽे भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान् । १
ठस भाषा का रूप जरा तो, हेमो अद्भुत कैसा,
कोमल-परुष, विरल-अविरलका अनुपम मिश्रणजैसा,
कहीं बाल-सारथ्य कहीं पर नवयौवन उद्दाम,
कहीं शान्त गम्भीर प्रकृति का यारुचित्र अभिराम,
नाना रूप, विविध, आभूषण, बहु शृङ्गार वितान,
अऽऽे भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान् । २
ठस भाषा का छन्दों से भी कितना प्रिय सम्बन्ध,
नीरस विषयों का भी कैसा सरस पद्यमय बन्ध,
गद्यों में भी पद्यों जैसा श्रवण-सुभद्र संगीत,
विश्व काव्य साहित्य मछोदधि का मधुमय नवनीत,
छंदों का भी कैसा मोलक स्वर-लय-तान विधान
अऽे भाग्य से हमने पाई यह सम्पत्ति महान । ३
ठसमें श्लेष-विरोधाभासों का अद्भुत विन्यास
यमक-अनुप्रासों का पद-पद पर मधुमय उल्लास,
ठसमें अपना रूप सजाती मानों कविता-बाला,
वाणी का मणिमय कीडाङ्गण या यह नर्तनशाला,
रचना के अगणित वैचित्र्यों का रमणीय निधान,

अऽे भाग्य से लमने पाई यल सम्पत्ति महान । ४
रस के डी अनुरुप अक्षरों का सुन्दर संयोजन,
भावों के अनुरुप पदों का आल्लाहक आयोजन,
पर्यायों में वस्तु-वस्तु के तत्त्वों का विश्लेष,
ऐक शब्द में बहुविध अर्थों का अद्भुत संश्लेष,
वसुधा में षसके वैभव का अति दुर्लभ उपमान,
अऽे भाग्य से लमने पाई यल सम्पत्ति महान । ५
रडीं बहुत-सी जग में पडले भाषायें विख्यात,
ऐक शब्द भी किन्तु न उनका आज किसी को ज्ञात ।
पर यल दिव्य लमारी वाणी यद्यपि अति प्राचीन
अडो आज भी कैसी षसकी जूवन-ज्योति नवीन ?
यडी लमारी स्फूर्ति-प्रेरणा का भी मूल-स्थान,
अऽे भाग्य से लमने पाई यल सम्पत्ति महान । ६

– रययिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskrita Eka Mahan Sampatti

pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

